

राजस्थान में पाषाण काल

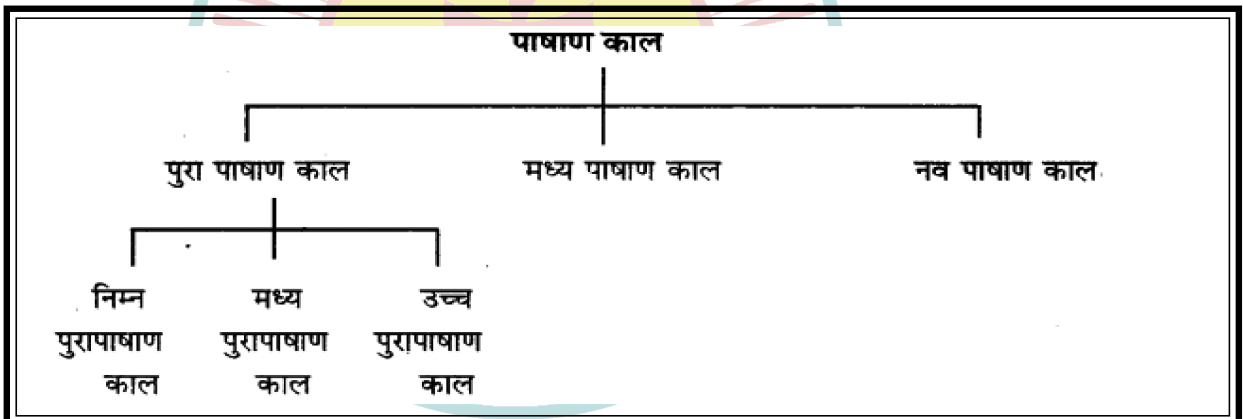
साक्ष्यों के आधार पर इतिहास का अध्ययन					
प्रागैतिहासिक			आद्य ऐतिहासिक		ऐतिहासिक
सिर्फ पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर इतिहास का अध्ययन करना प्रागैतिहासिक काल कहलाता है।			पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ लिखित साक्ष्य भी उपलब्ध हो लेकिन लिखित साक्ष्य पढ़े नहीं जा सकते हैं। उसे आद्य ऐतिहासिक काल कहते हैं।		पुरातात्विक व लिखित साक्ष्यों के आधार पर इतिहास का अध्ययन करना ऐतिहासिक काल कहलाता है।
1.पाषाण काल	2.ताम्रपाषाण काल	3.मध्यपाषाण काल	1.हड़प्पा काल	2.वैदिक काल	600 ई.पू. के बाद का काल

- **‘प्रागैतिहासिक’** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1851 ई. में इतिहासकार **‘डेनियल विल्सन’** ने अपनी पुस्तक **‘दि आर्कियोलॉजी एण्ड प्री हिस्टोरिका एनल्स ऑफ स्कॉटलैण्ड’** में किया था। प्रागैतिहासिक से तात्पर्य, इतिहास के उस काल से है ‘जब मनुष्य ने लिपि व लेखन कला का विकास नहीं किया था। मानव सभ्यता के इस आदिकाल को **‘पाषाण काल’** कहते हैं क्योंकि इस काल की जानकारी के लिये एकमात्र आधार पुरातात्विक अवशेष ही हैं और सर्वाधिक सामग्री पाषाण से बनी हुई मिली है।
- इतिहासकार **डॉ. देवकोठारी**, **डॉ. वी.एन. मिश्रा** एवं इतिहासविद् **डॉ. विजयकुमार** के अनुसार “मानव कंकाल कपाल, अस्थिपंजर, हड्डियाँ, पाषाण उपकरण आज से लगभग 5 लाख वर्ष पूर्व **लूणी नदी, बनास नदी, गंभीरी व बेड़च नदी** आदि स्थानों पर प्राप्त हुये हैं जिससे ज्ञात होता है कि 5 लाख वर्ष पूर्व पाषाण-युगीन संस्कृति का प्रसार व अस्तित्व राजस्थान में था।”
- भारत में पुरापाषाण काल की खोज सर्वप्रथम मई, 1863 में इतिहासकार **राबर्ट ब्रुसफुट** (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षक) द्वारा मद्रास के **‘चिंगलपुट’** जिले में **‘पल्लवरम’** नामक स्थान पर की गई। जहाँ लेटेराइट मिट्टी से एक “क्लीवर” (गंडासा) एवं ‘हस्तकुठार’ प्राप्त हुआ था। पश्चिमी राजस्थान लूणी नदी के किनारे पोकरा व बड़ी ढाणी के रेत के टीबों में प्रारम्भिक प्रस्तर युग के उपकरण मिले। चित्तौड़ से 1959 में गंभीरी नदी के पेटे से डॉ. वी. एन. मिश्रा ने 242 पाषाण उपकरण खोजे (प्रथम संग्रह में 135 उपकरण, दूसरे संग्रह में 107 उपकरण एकत्रित मिले)। गंभीरी व बेड़च नदियों के पेटे से चौपर हस्त कुल्हाड़ी एवं फल्य प्रस्तर उपकरण खोजे गये। राजस्थान के डीडवाना क्षेत्र में डेकन कॉलेज पूना द्वारा उत्खनन किया गया। पश्चिमी भारत में माही, साबरमती, बेड़च, बाणगंगा, गंभीरी, लूणी आदि नदियों के किनारे से एश्युलियन परम्परा के उपकरण खोजे गये हैं।

- 'राबर्ट ब्रुसफुट' को ही 'भारतीय प्रागैतिहासिक पुरातत्व का जनक' माना जाता है। इनका जन्म 1834 ई. में इंग्लैण्ड में और मृत्यु 1912 ई. में कलकत्ता में हुई।

इतिहासकारों ने पाषाण काल का विभाजन तीन प्रकार से किया है—		
1.	पुरापाषाण काल	5,00,000 से 10,000 BC तक
2.	मध्य पाषाण काल	10,000 से 4000 BC तक
3.	नव पाषाण काल	4000 से 1500 BC तक

काल	खोज	तिथि	स्थान
पुरापाषाणकाल	राबर्ट ब्रुसफुट	1863	पल्लवरम (मद्रास)
मध्यपाषाणकाल	C.L कार्लाइल	1867	विन्ध्य क्षेत्र
नवपाषाणकाल	जॉन लुब्बाक	1865	उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र



पुरा-पाषाण काल (500,000-10,000 BC तक)

इतिहासकारों ने पुरापाषाण काल को तीन भागों में उपविभाजित किया है—		
1.	निम्न पुरापाषाण काल	500,000 से 100,000 BC तक
2.	मध्य पुरापाषाण काल	100,000 से 40,000 BC तक
3.	उच्च पुरापाषाण काल	40,000 से 10,000 BC तक

❖ निम्न पुरापाषाण काल (500000 – 100000 ई.पू. तक) :

- भारत में निम्न पुरापाषाण कालीन मानव संस्कृति को प्राप्त उपकरणों के आधार पर 9 भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें 'राजस्थान का क्षेत्रीय भू-भाग' भी सम्मिलित है।

- निम्न पुरापाषाण कालीन राजस्थान के प्रमुख स्थल **डीडवाना, जायल (नागौर), सिंगीतालाब (डीडवाना)** क्षेत्र में मानव के अस्तित्व के प्रमाण मिले हैं। मानव के सबसे प्राचीन उपकरण जो सामान्य रूप से उपलब्ध नदी तल के प्रस्तर पर निर्मित है। इन्हें गोलाश्म उपकरण/शंकू उपकरण/चापर उपकरण कहते हैं। इस काल में हस्तकुठार का निर्माण हुआ जो प्रारम्भ में विकृत धार युक्त हस्तकुठार बना। इसी काल में विदारणी (क्लीवर) का निर्माण हुआ। कार्बन-14 पद्धति से प्रमाणित होता है कि राजस्थान सम्पूर्ण भारत में निम्न पुरापाषाण कालीन मानव का सर्वाधिक प्राचीन केन्द्र है।

काल	स्थान	औजार		पत्थर	विशेषता
निम्न पुरा-पाषाण काल (50,0000 से 10,0000 ई.पू. तक)	- डीडवाना - जायल - सिंगी तालाब	पेबुल	गोलाकार	- चेल्सडोनी पत्थर - बलुआ पत्थर - वाटिकाश्म पत्थर	- इस काल का मानव बर्बर, खानाबदोश, नितांत, शिकारी जीवन, कच्चा मांस खाता, खाद्य संग्रह नहीं करता था। - आग का आविष्कार नहीं हुई। - शव खुले में छोड़ दिये जाते थे।
		फलक	नुकीले		
		चापर	खण्डक		
		हैण्डएक्स	हस्तकुठार		
		स्क्रैपर	खुरचनी		
		वेधक	आरी जैसा		
		तक्षणी	पेचकस जैसा		

- ❖ **मध्य पुरापाषाण काल (100000 - 40000 ई.पू. तक) :** इस काल में मानव ने चपटे फलकों वाले पतले उपकरणों का निर्माण किया था। इस युग में मध्य आकार के हस्तकुठार, विदारणियाँ, खुरचणियाँ और छिद्रक बनने लगे। H.D साँकलिया ने इस काल को "फलक संस्कृति" कहा है। इस काल की संस्कृति के अवशेष सर्वप्रथम भारत में **नेवासा (महाराष्ट्र)** से प्राप्त हुए हैं। उत्तरप्रदेश के **मिर्जापुर व पं. बंगाल का बाकुण्डा एवं पुरलिया** से भी उपकरण प्राप्त हुए हैं।

काल	स्थान	औजार	पत्थर	विशेषता
मध्य पुरा-पाषाण काल (100000 से 40000 ई. पू. तक)	- डीडवाना (कुचामन) - जायल (नागौर) - लूणी नदी घाटी - बेड़च नदी घाटी - बूढा पुष्कर (अजमेर) - बागोर (भीलवाड़ा) - कामली घाट (राजसमंद) - तिलवाड़ा (बालोतरा) - सोजत (पाली) - पचपदरा (बालोतरा)	- फलक - ब्लेड - स्क्रैपर - ब्यूरिन (आरी) - वेधक - हैण्डएक्स - क्लीवर	- क्वार्टजाइट - जेस्पार - फिलन्ट	- इस काल के मानव को अग्नि की जानकारी हो गई थी। - अंत्येष्टी क्रियाओं से परिचित, शवों को दफनाया जाता था। - मानव गुफाओं व कंदराओं में रहने लगा गया। - वह भोजन संग्राहक बन गया था। - कुत्ता पालतू बन गया था। - उपकरण सुझौल व छोटे बनने लग गये। - मिट्टी के बर्तन, कांच के मनके, सीप व कांच की चूड़ियाँ बनने लगी थी।

- ❖ **उच्च पुरापाषाण काल (40000 - 10000 B.C तक) :** इस युग के उपकरण मुख्यतः ब्लेड पर निर्मित थे। राजस्थान में उच्च पुरा पाषाण काल के प्रमुख केन्द्र हम्मीरगढ़ (भीलवाड़ा), मानगढ़ (अलवर), नाथद्वारा (राजसमंद), जहाजपुर (भीलवाड़ा), गिलुण्ड (राजसमंद), कुवारिया आदि।

काल	स्थान	जिला	औजार	पत्थर	विशेषता
उच्च पुरा-पाषाण काल (40000 से 10000 ई.पू. तक)	विराटनगर	कोटपूतली बहरोड़	• ब्लेड	• चर्ट	- इस काल में आधुनिक मानव होमो-सेपियंस का उदय हुआ। - इस समय का मानव हड्डियों व हाथी दाँत के उपकरण बनाने सीख गया, उनमें सामुदायिक भावना विकसित हो गई तथा भवन निर्माण का प्रयास शुरू हो गया था। - मानव झुण्ड बनाकर रहने लगा। - गुफा चित्रकारी करना सीख गया। - पशुओं के बारे में जानकारी हो गई। - मिट्टी के बर्तन बनने लगे थे। - पहले बर्तन हाथ से बनते थे परंतु अब बर्तन चाक पर बनने लगे थे। - नौकाएँ बनने लग गई। - बढ़ई, कुम्हार, बुनकर व रंगरेज आदि के व्यवसाय आरम्भ हो गए। - इस युग के पाषाण से बने उपकरण हैण्ड एक्स की खोज राजस्थान में सी. ए. हैकर ने जयपुर व इन्द्रगढ़ में की। - इस काल में पूर्वकालीन उपकरणों के साथ ब्लेड, ब्यूरीन तथा प्वाइंट नामक उपकरणों का निर्माण किया गया।
	मानगढ़	अलवर	• स्क्रैपर	• जैस्पर	
	इन्द्रगढ़	बून्दी	• वेधक	• फिल्ट	
	दर	भरतपुर	• पाइण्टर		
	मण्डपियां	चित्तौड़	• चाकू		
	हममीरगढ़	भीलवाड़ा	• कुल्हाड़ियाँ		
	देवली	टोंक	• ओखली		
	भैंसरोड़गढ़	चित्तौड़	• मूसल		
	जहाजपुर	शाहपुरा			
	गिलुण्ड	राजसमंद			
	भरनी	टोंक			
	खींवसर	नागौर			
	समदड़ी	बालोतरा			

मध्यपाषाण काल (10000 - 4000 ई.पू. तक)

- मध्यपाषाण काल की जानकारी इतिहासकार 1867 ई. में C.L कार्लाइल द्वारा विंध्य क्षेत्र में "माइक्रोलिथिक सूक्ष्म पाषाण" उपकरण खोजने से मिली है। मध्यपाषाण काल के उपकरण पूर्ववर्ती पुरा पाषाण काल की तुलना में छोटे होने के कारण 'लघु पाषाण उपकरण' या 'सूक्ष्म उपकरण' (माइक्रोलीथ) कहे जाते थे। इस युग के पाषाण उपकरण 15 सेमी. तक रह गये। इसे लघु पाषाण उपकरण या सूक्ष्म पाषाण उपकरण कहते हैं। राजस्थान के बागौर तथा मध्यप्रदेश के आदमगढ़ से 5000 ई.पू. के पशुपालन के प्राचीनतम अवशेष मिले। इस काल में परिवार प्रथा का जन्म हो गया था शवों के साथ खाद्य एवं पेय सामग्री रखी जाती थी।

काल	स्थान	जिला	औजार	पत्थर	विशेषता
10000 से 4000 ई. पू. तक	तिलवाड़ा	बालोतरा	• स्क्रैपर	• जैस्पेर	• इस काल में पाषाण सूक्ष्म आकार के बनने लगे।
	आलनियाँ	कोटा	• प्वाइंटर	• चर्ट	• कुत्ता पालतु जानवर बन गया
	विलासगढ़	कोटा	• कोर ब्लेड	• क्वार्टजाइट	• चाक का आविष्कार हो गया।
	सोहनपुरा	नीमकाथाना	• खुरचनी	• कार्नेलियन एगेट	• मनुष्य खाद्य संग्राहक बन गया।
	हरसौरा	कोटपूतली बहरोड़	• बेधक		• वह धनुष बाण का प्रयोग करने लग गया।
			• फलक		• शव दफनाये जाने लगे।
			• हार्पुन हैड		• मानव धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित हो गया
	बेड़चघाटी	चित्तौड़			• चूल्हे के साक्ष्य मिले हैं।
	पंचपद्राघाटी	बालोतरा			• सिलबट्टे आदि मिले हैं।
	विराटनगर	कोटपूतली बहरोड़			• घास-फूस, दाने पीसना आदि सीख गया।
	बागौर	भीलवाड़ा			• सभी गुफा चित्रकारी से परिचित थे। (साक्ष्य—आलनियाँ—कोटा)
					• इस काल में मानव पत्थरों पर चित्रों का अंकन करने लगा था।
					• मध्य पाषाण काल में मानव ने शवों को दफनाना प्रारम्भ कर दिया था।
					• शैत्रचित्र—पत्थरों, चट्टानों पर बने चित्र।
					• शैलग्राम—गुफाओं व कंदरों में बने आश्रय स्थल।
					• राजस्थान व गुजरात के पुरा स्थलों से ज्ञात होता है कि इस युग का मानव आखेटक, खाद्य संग्राहक अवस्था में रहता हुआ पशुपालन की ओर अग्रसर था।
					• राजस्थान में मध्यपाषाणकालीन प्रमुख केन्द्र डीडवाना, नागौर था।
					• मध्यपाषाणकालीन पशुपालन के अवशेष तिलवाड़ा (बालोतरा) लूणी नदी से भी प्राप्त हुए।

नवपाषाण काल (4000- 1500 ई. पू. तक)

- पुरातत्त्ववेत्ता जॉन लुब्बाक ने अपनी पुस्तक "Pre Historica Times" में 1862 ई. में नवपाषाण शब्द का प्रयोग किया है। नवपाषाण के मानव का जीवन स्थिर ग्राम्य जीवन था। भारत में नवपाषाण काल की प्रथम खोज लेन्मेसुरियर ने 1860 में टोंस नदी घाटी (U.P) में की थी।

काल	स्थान	जिला	औजार	पत्थर	विशेषता
4000 से 1500 B.C तक	आहड़	उदयपुर	• कुल्हाड़ी	• चूना पत्थर	- इस काल में कृषि व पहिये का आविष्कार हो गया था तथा चाक पर बर्तन बनने लगे थे। - मानव आग पर बर्तन पकाने लग गया। - नाव का निर्माण कर लिया। - स्थायी जीवन पद्धति की शुरुआत हो गई। - मानव पशुपालक बन गया। - उसे धातुओं का ज्ञान हो गया। - कृषि कार्यों—बुवाई, गुड़ाई, नड़ाई व कटाई आदि की जानकारी हो गई। - औजारों पर चमकदार पॉलिश करने लगा। - आधुनिक जीवन पद्धति की शुरुआत हो गई। - सूती—ऊनी वस्त्रों से परिचित थे। - जाति व्यवस्था का सूत्रपात / सभ्यताओं का जन्म हुआ। - नवपाषाण के लोग पूर्णतः पत्थर से बने औजारों पर निर्भर थे। - राजस्थान में ताम्रपाषाण कालीन स्थल:—आहड़, झाड़ोल, बालाथल, चीथावाड़ी, किराडोट, नंदलालपुरा, साबणिया, पूगल, बूढ़ा पुष्कर, कुराड़ा, परबतसर, पीण्डपाडलिया, मलाह, ओझियाना, बेणेश्वर, गणेश्वर आदि। - राजस्थान में लौहयुगीन सभ्यता स्थल—सांभर, नोह, सोनारी, रेट, नगर, नैणवा, भीनमाल, नगरी, जोधपुरा व विराटनगर।
	गिलुण्ड	राजसमंद	• चाकू	• बलुआ पत्थर	
	झर	जयपुर	• बसूला	• काष्ठाभ	
	समदड़ी	बालोतरा	• सेल्ट	• क्वार्टजाइट	
	भरणी	टोंक	• तीर	• जैस्पर	
	हम्मीरगढ़	भीलवाड़ा	• ओखाली		
	जहाजपुर	भीलवाड़ा	• हेमरस्टोन		
			• छेनी		

नोट : राजस्थान में मानव मध्य पाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया। राजस्थान में नवपाषाण के अवशेष प्राप्त नहीं होते हैं। इस युग में सामाजिक रूप से व्यवसाय के आधार पर जाति व्यवस्था का सूत्रपात हो गया था।

महत्त्वपूर्ण पाषाण कालीन स्थल

- ❖ **जायल (नागौर) :** यह पुरापाषाण कालीन स्थल है। यहाँ से हमें हस्तकुठार (हैण्ड-एक्स), विदारिणी तथा चापर नामक पत्थर के उपकरण मिले हैं।
- ❖ **दर (भरतपुर) :** भरतपुर जिले के 'दर' नामक स्थान पर पुरापाषाण कालीन चित्रित शैलाश्रय (शिलाकुटीर) मिले हैं। जिनमें मानवाकृति, व्याघ्र, बारहसिंगा तथा सूर्य आदि के चित्र अंकित हैं।
- ❖ **तिलवाड़ा (बालोतरा) :** यह स्थल लूनी नदी के किनारे बालोतरा में स्थित है।
 - उत्खनन कार्य – डॉ. वी. एन. मिश्रा द्वारा। तिलवाड़ा से अग्निकुण्ड, मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं की अस्थि के अवशेष मिले हैं।
 - तिलवाड़ा से पुरापाषाण, मध्यपाषाण व नवपाषाण तीनों के साक्ष्य मिले हैं।
 - मानव आवास तथा पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य भी मिले हैं।
 - मानव के आखेटवृत्ति के साक्ष्य मिले हैं।
- ❖ **बागौर (भीलवाड़ा) :** यह स्थल भीलवाड़ा जिले में बनास की सहायक 'कोठारी नदी' के किनारे स्थित है।
 - उत्खनन कार्य – वी. एन. मिश्रा, डॉ. एल.एस. लश्निक (जर्मनी) द्वारा 1967 से 1969 के मध्य किया गया। यहाँ से भारत के प्राचीनतम पशुपालन के प्रमाण मिले हैं। (5000 ई. पू. के लगभग)
 - पाषाणिक स्थलों से जहाँ भी तीनों स्तर पाये हैं वहाँ प्रथम स्तर में मानव आखेटक, द्वितीय स्तर—पशुपालक एवं तृतीय स्तर पर कृषक के रूप में सर्वप्रथम दृष्टिगत हुआ है।
 - यहाँ से बड़ी संख्या में लघु पाषाण उपकरण (हथौड़े, गोफण की गोलियाँ, छेद वाले पत्थर, तांबे के उपकरण, जिनमें छेद वाली सुई, एक कुंताग्र, एक त्रिभुजाकार शस्त्र आदि) मिले हैं।
 - बागौर मध्य पाषाण कालीन सभ्यता का स्थल और लघु पाषाण उपकरण का प्रमुख केन्द्र था।
 - बागौर को 'आदिम संस्कृति का संग्रहालय' कहा जाता है।
 - इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंगा, सुअर, गीदड़ तथा कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं। पाषाण उपकरणों में—मानव कंकाल। लघु पाषाण उपकरण— ब्लेड, छिद्रक, स्क्रैपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि मिले हैं।

पाषाणयुगीन मानव जीवन

1. पुरा-पाषाण काल

(5 लाख से 10,000 बी.सी. तक)

❖ प्रमुख विशेषताएँ :

- **निवास स्थान**— आदिम मानव को संभवतः 'घर' बनाना नहीं आता था। प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा हेतु वह पर्वत की कंदराओं, नदी-झीलों के छोड़े हुए कगारों एवं वृक्षों की शरण लेता था अर्थात् अस्थायी निवास।
- **जीवन निर्वाह**—वह कंद-मूल-फल एवं जानवरों का शिकार कर उनका मांस खाता था। 'मध्यपुरापाषाण काल' में वह खाद्य सामग्रियों का संग्रहण करना सीख गया था।
- **सामाजिक जीवन**—निम्न पुरापाषाण काल का मानव जीवन पूर्णतः बर्बर, खानाबदोश-घुमक्कड़ था। मध्यपुरापाषाण व उच्च पुरापाषाण काल में बड़े शिकार की आवश्यकता एवं सुरक्षा कारणों के परिणामस्वरूप उनमें समन्वय व सहयोग की भावना का जन्म हुआ और अब वह टोली-झुण्ड बनाकर रहने लगा। उच्च पुरापाषाण काल में मानव ने वृक्षों की छाल एवं पशुओं की खाल से अंगों को ढकना शुरू कर दिया। जो कि मानव के आरंभिक सामाजिक विचार की अभिव्यक्ति थी।
- **धार्मिक जीवन**—निम्न पुरापाषाण में किसी प्रकार की 'धार्मिक भावना' का उदय नहीं हुआ था। वे मृतकों को खुले मैदान में छोड़ देते थे, लेकिन मध्य एवं उच्च पुरा पाषाण काल में मानव अंत्येष्टि जैसी क्रियाओं से परिचित हो गया था।
- **आर्थिक जीवन**—निम्न पुरा पाषाण कालीन मानव पूर्ण उपभोक्तावादी था, वह संग्रहण कला से अपरिचित था। मध्य पुरापाषाण काल में वन्य जीवों व शिकार के अभाव ने उसे 'संग्रहण कला' से बोध करा दिया। अब मानव खाद्य-संग्रहण करने लगा और भोजन की अग्रिम व्यवस्थाओं की क्रियाओं को सम्पन्न करने लगा।

2. मध्यपाषाण काल

(10,000 बी.सी. से 4,000 बी.सी. तक)

❖ प्रमुख विशेषता :

- **निवास स्थान**—मध्यपाषाण कालीन मानव इस काल में, कंदराओं-गुफाओं से निकलकर छोटी-छोटी पहाड़ियों पर रहने लग गया था। उसके आवास घास-फूस के बने थे तथा कहीं कहीं पत्थर लगे थे। घरों के चारों तरफ खंभे गाड़ने के साक्ष्य मिले हैं। 1867 ई. में सर्वप्रथम C.L कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र से मध्यपाषाण काल के औजारों को खोजा।

- **जीवन निर्वाह** – यह काल, संक्रमण काल का प्रतिनिधित्व करता है। मानव के उपकरण, शिकार तथा रहन-सहन की पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देते हैं। मानव छोटे-छोटे उपकरण रखने लगा और छोटे-छोटे जानवरों का शिकार करने लगा, जैसे- मछलियों एवं पक्षियों का शिकार। मानव अब शिकार के साथ-साथ खाद्य संग्रहण में भी विशेषज्ञ हो गया।
- **सामाजिक जीवन** – इस काल में मध्यप्रदेश के आदमगढ़ एवं राजस्थान के बागौर (भीलवाड़ा) से पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य मिलते हैं। अग्नि का प्रयोग (निरंतर प्रयोग) मध्यपाषाण को पुरापाषाण से अलग करता है। सामूहिक चूल्हे की प्राप्ति इस बात का प्रमाण है कि सामूहिक जीवन के साथ-साथ भोजन पकाने की कला की शुरुआत हो चुकी थी।
- **धार्मिक जीवन** – इस काल में मनुष्य ने शवों को दफनाना आरंभ कर दिया था क्योंकि उत्खनन में अनेक अस्थि-पंजर मिले हैं। कुछ शवों के सिर पूर्व की ओर व कुछ के पश्चिम की ओर मिले हैं। इस काल में अस्थि पंजरो के साथ, अनेक पाषाण सामग्री भी मिली हैं। जो लोकोत्तर जीवन के विषय में मनुष्य की भावना के विकास को दर्शाती है। मानव अस्थियों के साथ कुत्ते के अस्थि-पंजर भी उपलब्ध हुये हैं, संभवतया इसका भी कोई धार्मिक महत्व रहा हो।
- **आर्थिक जीवन** – मनुष्य ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू बनाया जो शिकार में मदद करता था। बागौर (भीलवाड़ा) से पाषाण के साथ-साथ लौहकाल के उपकरण व मानव कंकाल मिले हैं। इसी युग में भाला व धनुष-बाण का भी विकास हुआ।

3. नवपाषाण काल

(4,000 बी.सी. से 1,500 बी.सी. तक)

- ❖ **प्रमुख विशेषताएँ** : नवपाषाण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जॉन लुब्बाक (Pre-Historica Times) ने किया था।
- **निवास स्थान** – इस काल में मनुष्य ने नदी तटों और पहाड़ियों के समतल स्थलों पर अपने मकान बनाने का प्रयास किया। भवन निर्माण कला का यह प्रथम प्रयोग था।
- **जीवन निर्वाह** – इस काल में भोजन पकाने के ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास हुआ। पशुओं के माँस के अलावा पशुपालन का व्यवसाय शुरू हो चुका था। भेड़, बकरी, गाय, भैंसे इत्यादि। पशुओं को पालतू बनाया जाने लगा। पशुओं से अन्य उत्पाद भी प्राप्त करते थे, जैसे – दूध, दही बनाने की कला का ज्ञान। इस काल में दूसरे पेड़-पौधों के रस भी उनके पेय पदार्थों में शामिल हो गए। इस काल में कृषि की शुरुआत हो गई – गेहूँ, जौ व कपास के साक्ष्य मिले। कृषि का सर्वप्रथम साक्ष्य 'मेहरगढ़' (ब्लुचिस्तान) से प्राप्त हुआ।

- **सामाजिक जीवन** – इस काल में मनुष्य पशुपालन एवं कृषि करना नियमित कर चुके थे, इसके फलस्वरूप वे अलग-अलग समूहों में रहने लगे। जिससे परिवार का आकार बढ़ने लगा था। भौगोलिक भिन्नताओं के कारण मनुष्य के रहन-सहन, खान-पान एवं व्यवसायों में विविधता आई। फलतः व्यवसाय के आधार पर अनेक वर्ग एवं जातियाँ बनने लगी। कपास की खेती के कारण सूत काटने व कपड़ा बुनने का काम आरंभ हो चुका था। राजस्थान में सूती व ऊनी वस्त्रों का आरंभ हो गया।
- **आर्थिक जीवन**– इस काल में पारिवारिक भावना मजबूत हुई। परिवार में सर्वाधिक बलशाली व अनुभवी पुरुष परिवार का 'मुखिया' होता था। सामाजिक व्यवस्था मातृ-सत्तात्मक से पितृसत्तात्मक में परिवर्तित होने लगी। इस काल में व्यक्तिगत संपत्ति की भावना का विकास हुआ। इस काल में श्रम विभाजन व स्त्री-पुरुष में भेद आरंभ हो गया। 'मृदभाण्ड कला' का विकास इसी काल में हुआ। इस युग में बढ़ई, कुम्हार, बुनकर, रंगरेज आदि व्यवसायों की शुरुआत हुई। इस काल में मनुष्य अब नौकाएँ बनाने लगा। इस काल में **पहिये का आविष्कार** हुआ। उत्खनन से चरखे के अंश प्राप्त होते हैं जिससे इस युग में कताई और बुनाई कला से भी परिचित होने का अनुमान लगाया जा सकता है।
- **धार्मिक जीवन** –नवपाषाणिक काल में मानव ने प्राकृतिक शक्तियों के रूप में 'मातृदेवी की उपासना' आरंभ की। इस काल में मृतको की हड्डियों हेतु अस्थि पात्रों व शव के ऊपर बनी समाधियों से उनके जीवन चक्र और पुनर्जन्म में विश्वास की धारणा का पता चलता है।
- ❖ **राजस्थान में धातु काल :**
- **ताम्र-पाषाण व ताम्र-काँस्य काल :**
- धातुकाल के अन्तर्गत राजस्थान के भी अनेक स्थानों से ताम्रकाल के अवशेष मिले हैं जो तात्कालीन युग में राजस्थान के मानव के सांस्कृतिक विकास को बताते हैं।
- राजस्थान के ताम्रकालीन संस्कृति के प्राचीन स्थलों में गणेश्वर (सीकर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), आहड़, गिलुण्ड व झौडौल (उदयपुर), पिण्डयाडलियाँ, कुराड़ा (नागौर), सावणिया व पूगल (बीकानेर), नन्दलालपुरा किराडोट व चीथवाड़ी (जयपुर), एलाना (जालौर), बूढा पुष्कर (अजमेर), कोल माहोली (सवाई माधोपुर) व मलाह (भरतपुर) आदि प्रमुख हैं।
- रेडियो कार्बन विधि के आधार पर गणेश्वर को ताम्रयुगीन संस्कृतियों में प्राचीनतम मानकर इसे "भारतीय ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी" मानते हैं।
- इसी प्रकार किराडोट जिला – जयपुर में ताम्रयुगीन 58 चूड़ियों की प्राप्ति हुई है।
- मलहा-भरतपुर से बड़ी संख्या में ताम्र हारपून और तलवारें भी प्राप्त हुई हैं।
- **हारपून** – यह प्रागैतिहासिक युग का वह हथियार है जिससे व्हेल मछली अथवा गैंडे जैसे बड़े जानवरों का शिकार किया जाता था।

○ राजस्थान में लौह काल :

- ताम्र व कांस्य के बाद मानव ने लौह धातु का ज्ञान प्राप्त करके उसका प्रयोग आरम्भ किया।
- यह काल लगभग 1300 ई.पू. का था।
- सबसे पहले हैती जाति ने लौहे का प्रयोग शुरू किया था।
- लौहे का ज्ञान व उसका प्रयोग एक मानव इतिहास की युगान्तकारी घटना थी।
- राजस्थान में नोह (भरतपुर), जोधपुरा (जयपुर), सुनारी (झुन्झुनुं) व रैढ़ (टोंक) आदि स्थानों से लौह संस्कृति के हथियार व उपकरण मिले हैं।
- नोह से प्राप्त लोहे के अवशेषों से भारत में लौहयुग के आरम्भ होने का महत्वपूर्ण स्रोत है।
- जोधपुरा व सुनारी से लोहे को गलाने की भट्टियाँ और उसके अस्त्र-शस्त्र तथा उपकरण बनाने के कारखानों के अवशेष मिले हैं।
- रैढ़ में लौह सामग्री की प्रचुरता के कारण इसे 'प्राचीन राजस्थान के टाटानगर' की संज्ञा दी गई।
- इस स्थान से लौहे से बने तीर, भाले व अन्य सामग्री प्राप्त हुई है।

